

पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

हबीब तनवीर: जीवन परिचय – भारतीय रंगमंच के अमर स्तंभ

प्रस्तावना

हबीब तनवीर (Habib Tanvir) भारतीय रंगमंच के सबसे प्रभावशाली नाट्यकर्मियों में से एक थे। उन्होंने नाटक, कविता, निर्देशन और अभिनय के माध्यम से भारतीय लोकनाट्य परंपरा को नया जीवन दिया। उनके नाटकों में लोक संस्कृति, सामाजिक विषमताएँ और मानवीय संवेदनाएँ गहराई से झलकती हैं। इस लेख में हम हबीब तनवीर के जीवन, उनके योगदान और प्रमुख नाटकों के बारे में विस्तार से जानेंगे।

हबीब तनवीर का प्रारंभिक जीवन

जन्म और शिक्षा:

हबीब तनवीर का जन्म 1 सितंबर, 1923 को छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में हुआ था। उनका पूरा नाम हबीब अहमद खान तनवीर था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा रायपुर में पूरी की और 1944 में नागपुर विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

रंगमंच की ओर झुकाव:

हबीब तनवीर को बचपन से ही साहित्य और कला में गहरी रुचि थी। स्नातक करने के बाद उन्होंने 1945 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में दाखिला लिया, लेकिन जल्द ही वे इण्टा (इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन) से जुड़ गए, जो उनके जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

ब्रिटेन में नाट्य शिक्षा:

1955 में हबीब तनवीर ने रॉयल एकेडमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट्स (RADA), लंदन से नाट्य लेखन और निर्देशन की शिक्षा प्राप्त की। वहाँ उन्होंने यूरोपीय रंगमंच की बारीकियों को सीखा, लेकिन उनका मन भारतीय लोक नाट्य शैली की ओर ही अधिक आकर्षित था।

हबीब तनवीर का रंगमंच योगदान

नया थिएटर की स्थापना:

1959 में हबीब तनवीर ने "नया थिएटर" की स्थापना की, जो भारतीय रंगमंच में एक क्रांतिकारी कदम साबित हुआ। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने लोक कलाकारों को मुख्यधारा के नाटकों में शामिल किया, जिससे पारंपरिक और आधुनिक नाट्य शैली का अनूठा संगम सामने आया।

लोकनाट्य को नया आयाम:

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

हबीब तनवीर ने छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य शैली "नाचा" को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। उन्होंने ग्रामीण कलाकारों के साथ मिलकर ऐसे नाटक तैयार किए, जिनमें स्थानीय बोली, संगीत और नृत्य का प्रयोग किया गया।

प्रमुख नाटक और रचनाएँ:

हबीब तनवीर ने कई यादगार नाटक लिखे और निर्देशित किए, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:

1. चरनदास चोर (1975) – यह नाटक उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है, जिसने भारत ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी खूब प्रशंसा बटोरी। इस नाटक में एक चोर की कहानी के माध्यम से समाज की विसंगतियों को उजागर किया गया है।
2. आगरा बाजार (1954) – यह नाटक मशहूर शायर नाजिर अकबराबादी की जिंदगी पर आधारित है, जिसमें सामान्य जन की भाषा और संवेदना को मंच पर उतारा गया।
3. हिरमा की अमर कहानी – छत्तीसगढ़ की लोककथा पर आधारित यह नाटक स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कृति है।
4. देख रहे हैं नैन – इसमें भारतीय राजनीति और सामाजिक विषमताओं को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया।
5. मिट्टी की गाड़ी (1958) - यह नाटक संस्कृत नाटककार शूद्रक के 'मृच्छकटिकम्' का आधुनिक रूपांतरण था। इसमें उन्होंने सामाजिक विषमताओं और मानवीय संवेदनाओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया।
6. गाँव का नाम ससुराल, मोर नाम दामाद (1973) - यह नाटक ग्रामीण जीवन की विडंबनाओं और सामाजिक संरचनाओं पर व्यंग्य करता है। इसमें उन्होंने छत्तीसगढ़ी लोकशैली का प्रभावी उपयोग किया।
7. राजरक्त (2006) - यह नाटक शेक्सपियर के 'मैकबेथ' का भारतीय रूपांतरण था, जिसमें उन्होंने सत्ता, लालच और नैतिकता के विषयों को छुआ।

इनके अलावा, उन्होंने मुद्राराक्षस, बसंत ऋतु का सपना, शाजापुर की शांतिबाई जैसे नाटकों का आधुनिक रूपांतरण भी किया।

हबीब तनवीर का फिल्मी करियर: रंगमंच से सिनेमा तक

हबीब तनवीर मुख्य रूप से एक नाट्यकर्मी, निर्देशक और लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं, लेकिन उन्होंने हिंदी सिनेमा में भी अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई। थिएटर की तरह ही उनका फिल्मी सफर भी सामाजिक सरोकारों और कलात्मक गहराई से परिपूर्ण रहा। उन्होंने कुछ चुनिंदा फिल्मों में अभिनय किया, जिनमें से अधिकतर में उनकी मंचीय प्रभावशाली उपस्थिति और संवाद अदायगी की छाप साफ़ देखी जा सकती है।

हबीब तनवीर की प्रमुख फिल्में:-

1. गांधी (1982) – अंग्रेज अधिकारी की भूमिका:

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

- निर्देशक: रिचर्ड एटनबरो
- भूमिका: एक ब्रिटिश अधिकारी
- हबीब तनवीर ने इस ऑस्कर विजेता फिल्म में एक छोटी पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- यह फिल्म भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित थी।

2. हीरो हीरालाल (1988) – पत्रकार की भूमिका:

- निर्देशक: केतन मेहता
- भूमिका: एक पत्रकार
- यह फिल्म एक साधारण आदमी के सेलिब्रिटी बनने की कहानी थी, जिसमें नसीरुद्दीन शाह मुख्य भूमिका में थे।
- हबीब तनवीर ने इसमें एक संवेदनशील पत्रकार का किरदार निभाया।

3. प्रहार (1991) – शिक्षक की भूमिका:

- निर्देशक: नाना पाटेकर
- भूमिका: एक स्कूल टीचर
- यह फिल्म सैन्य जीवन और समाज के बीच के संघर्ष पर केंद्रित थी।
- हबीब तनवीर ने इसमें एक गंभीर और अनुशासनप्रिय शिक्षक का अभिनय किया।

4. द राइजिंग: मंगल पांडे (2005) – राजा की भूमिका:

- निर्देशक: केतन मेहता
- भूमिका: एक भारतीय राजा
- यह फिल्म 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के नायक मंगल पांडे के जीवन पर आधारित थी।
- हबीब तनवीर ने एक देशभक्त राजा का किरदार निभाया, जिसमें उनके आवाज़ का जादू और अभिव्यक्ति की तीव्रता झलकती थी।

5. ब्लैक एंड व्हाइट (2008) – मौलवी साहब की भूमिका:

- निर्देशक: सुभाष घई
- भूमिका: एक दार्शनिक मौलवी

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

- यह फिल्म सांप्रदायिक सद्भाव और आतंकवाद पर केंद्रित थी।
- हबीब तनवीर ने इसमें एक बुद्धिमान और शांतिप्रिय मौलवी का किरदार निभाया, जो उनके सादगीपूर्ण अभिनय का उदाहरण था।

हबीब तनवीर की अभिनय शैली:-

- थिएटर की छाप: उनके फिल्मी किरदारों में भी नाटकीय उपस्थिति और संवादों की गहराई साफ झलकती थी।
- प्राकृतिक अभिनय: वे बिना किसी बनावट के, सहज ढंग से अपने किरदारों को जीवंत कर देते थे।
- सामाजिक संदेश: उन्होंने ऐसी फिल्मों को चुना, जिनमें मानवीय मूल्यों और सामाजिक विषमताओं को उजागर किया गया था।

हबीब तनवीर के पुरस्कार और सम्मान: भारतीय रंगमंच की अमर विरासत

हबीब तनवीर को भारतीय रंगमंच के सबसे प्रतिष्ठित हस्ताक्षरों में से एक माना जाता है। उनके लोक नाट्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी योगदान को देखते हुए भारत सरकार और विभिन्न संस्थानों द्वारा उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया। ये पुरस्कार न केवल उनकी कला को मान्यता देते हैं बल्कि भारतीय लोक कला के संरक्षण में उनके अथक प्रयासों का भी प्रमाण हैं।

प्रमुख पुरस्कार और सम्मान:-

1. संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (1969):

- यह भारत में नाट्य कला का सर्वोच्च सम्मान माना जाता है
- हबीब तनवीर को यह सम्मान उनके नाट्य निर्देशन और लोक नाट्य को नई दिशा देने के लिए दिया गया
- इस समय तक वे 'आगरा बाजार' और 'मिट्टी की गाड़ी' जैसे प्रयोगधर्मी नाटकों का मंचन कर चुके थे

2. पद्मश्री (1983):

- भारत सरकार का चौथा सर्वोच्च नागरिक सम्मान
- कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया
- इस समय तक उनका प्रसिद्ध नाटक 'चरनदास चोर' (1975) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा प्राप्त कर चुका था

3. कालिदास सम्मान (1990):

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

- मध्य प्रदेश सरकार का सर्वोच्च सांस्कृतिक सम्मान
- नाट्य कला में उनके योगदान को देखते हुए प्रदान किया गया
- यह सम्मान उनके छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य 'नाचा' को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के प्रयासों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण था

4. संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप (1996):

- संगीत नाटक अकादमी का सर्वोच्च सम्मान
- यह फेलोशिप 'अकादमी रत्न' के नाम से भी जानी जाती है
- इस समय तक वे 50 से अधिक नाटकों का निर्देशन कर चुके थे

5. पद्म भूषण (2002):

- भारत सरकार का तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान
- कला के क्षेत्र में उनके आजीवन योगदान के लिए प्रदान किया गया
- 79 वर्ष की आयु में प्राप्त यह सम्मान उनके करियर का चरमोत्कर्ष माना जाता है

अंतरराष्ट्रीय पहचान:-

हबीब तनवीर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विशेष सम्मान प्राप्त हुआ:

- 1982 में उनके नाटक 'चरनदास चोर' ने एडिनबर्ग इंटरनेशनल ड्रामा फेस्टिवल में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की
- फ्रांस, जर्मनी और ब्रिटेन सहित कई देशों में उनके नाटकों को भारी सराहना मिली
- 2007 में उन्हें 'एशिया पैसिफिक थियेटर अवार्ड' से सम्मानित किया गया

विरासत:-

हबीब तनवीर द्वारा प्राप्त ये सम्मान केवल व्यक्तिगत उपलब्धियां नहीं थे, बल्कि ये भारतीय लोक नाट्य परंपरा को मिली मान्यता का प्रतीक थे। आज भी:

- उनके नाटक देश-विदेश में मंचित किए जाते हैं
- नया थियेटर द्वारा उनकी परंपरा को आगे बढ़ाया जा रहा है
- भारतीय रंगमंच के छात्र उनके कार्यों का अध्ययन करते हैं

निजी जीवन और विरासत

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

हबीब तनवीर ने मोनिका मिश्रा से विवाह किया, जो एक थिएटर कलाकार और लेखिका थीं। उनकी बेटी नगम तनवीर भी रंगमंच से जुड़ी हुई हैं। 8 जून, 2009 को 85 वर्ष की आयु में हबीब तनवीर का निधन हो गया, लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी भारतीय रंगमंच को प्रेरित करती हैं।

निष्कर्ष

हबीब तनवीर ने भारतीय रंगमंच को एक नई दिशा दी। उन्होंने लोक कलाकारों को मुख्यधारा में लाकर साबित किया कि कला किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं होती। उनके नाटक आज भी दर्शकों के दिलों में जिंदा हैं और थिएटर के छात्रों के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। "हबीब तनवीर सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि भारतीय रंगमंच की एक पूर्ण परंपरा हैं।"

प्रश्न – अभ्यास

(मौखिक)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. कर्नल कालिंज का खेमा जंगल में क्यों लगा हुआ था?

उत्तर 1: कर्नल कालिंज को शक था कि वज़ीर अली जंगल में छिपा हो सकता है। उसे पकड़ने के लिए उन्होंने अपना खेमा जंगल में लगाया।

प्रश्न 2. वज़ीर अली से सिपाही क्यों तंग आ चुके थे?

उत्तर 2: वज़ीर अली को खोजने के लिए सिपाहियों ने लंबे समय तक जंगल में मेहनत की, लेकिन सफलता नहीं मिली। इस वजह से वे थकान और परेशानी महसूस करने लगे।

प्रश्न 3. कर्नल ने सवार पर नज़र रखने के लिए क्यों कहा?

उत्तर 3: कर्नल को शक था कि वह सवार वज़ीर अली का साथी हो सकता है। इसलिए उन्होंने सवार पर कड़ी नज़र रखने का निर्देश दिया।

प्रश्न 4. सवार ने क्यों कहा कि वज़ीर अली की गिरफ्तारी बहुत मुश्किल है?

उत्तर 4: क्योंकि वह सवार खुद वज़ीर अली था, जो बहादुर और चतुर सिपाही के रूप में छिपा हुआ था।

(लिखित)

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. वज़ीर अली के अफ़साने सुनकर कर्नल को रॉबिनहुड की याद क्यों आ जाती थी?

उत्तर 1:

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

1. वज़ीर अली के कारनामे: वज़ीर अली एक निडर और साहसी व्यक्ति था। उसने कई अद्भुत और खतरनाक कार्य किए थे। वह अपनी जान की परवाह किए बिना खतरों का सामना करता था। उसकी बहादुरी के किस्से आम लोगों के बीच चर्चा में रहते थे।
2. रॉबिनहुड से समानता: रॉबिनहुड भी इसी तरह साहसी और अद्भुत कारनामों के लिए प्रसिद्ध था। इसी वजह से कर्नल को वज़ीर अली के किस्से सुनकर रॉबिनहुड की याद आ जाती थी।

प्रश्न 2. सआदत अली कौन था? उसने वज़ीर अली की पैदाइश को अपनी मौत क्यों समझा ?

उत्तर 2:

1. सआदत अली का परिचय: सआदत अली, आसिफ़उद्दौला का भाई और वज़ीर अली का शत्रु था। वह अंग्रेज़ों का मित्र था और उनकी मदद करता था।
2. वज़ीर अली का जन्म: पहले यह माना जा रहा था कि आसिफ़उद्दौला के घर कोई संतान नहीं होगी। लेकिन वज़ीर अली के जन्म ने सआदत अली को चिंतित कर दिया। उसने इसे अपनी सत्ता और जीवन के लिए खतरा मान लिया।

प्रश्न 3. सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का क्या मकसद था ?

उत्तर 3:

1. कर्नल का उद्देश्य: कर्नल का असली उद्देश्य अवध को पूरी तरह से अपने नियंत्रण में लेना था। वह जानता था कि सआदत अली एक विलासी और कमजोर शासक था, जो अंग्रेज़ों की इच्छाओं को मानने में सहज था।
2. अंग्रेज़ों से सआदत अली की मित्रता: सआदत अली ने अंग्रेज़ों से मित्रता की और उन्हें अपनी आधी संपत्ति और दस लाख रुपये दे दिए। यह कर्नल के लिए अवध पर कब्जा करने का मार्ग प्रशस्त करता था।

प्रश्न 4. कंपनी के वकील का कत्ल करने के बाद वज़ीर अली ने अपनी हिफ़ाज़त कैसे की ?

उत्तर 4:

1. आजमगढ़ की ओर प्रस्थान: कंपनी के वकील की हत्या के बाद, वज़ीर अली अपने साथियों के साथ आजमगढ़ की ओर भाग गया।
2. जंगलों में शरण: आजमगढ़ के शासक ने उन्हें अपनी सुरक्षा में घाघरा तक पहुँचाया। इसके बाद, वज़ीर अली और उसके साथी कई सालों तक जंगलों में छिपे रहे।

प्रश्न 5. सवार के जाने के बाद कर्नल क्यों हक्का-बक्का रह गया?

उत्तर 5:

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

1. सवार की पहचान: सवार के जाने के बाद कर्नल यह जानकर चौंक गया कि वह और कोई नहीं, बल्कि स्वयं वज़ीर अली था। कर्नल और उसकी सेना लंबे समय से वज़ीर अली को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे।
2. वज़ीर अली का साहस: वज़ीर अली ने बड़ी निर्भीकता से कर्नल को अपना परिचय दिया और फिर घोड़े पर सवार होकर तेज़ी से भाग गया। उसकी तीव्रता और साहस ने कर्नल को सोचने-समझने का मौका ही नहीं दिया, जिससे वह हक्का-बक्का रह गया।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. लेफ्टीनेंट को ऐसा क्यों लगा कि कंपनी के खिलाफ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई है?

उत्तर 1:

- (i) लंबा समय बीतना - वज़ीर अली को पकड़ने के लिए अंग्रेज़ी सेना गोरखपुर के जंगलों में हफ्तों से डेरा डाले हुए थी। लेफ्टीनेंट को महसूस हुआ कि इतने लंबे समय तक डटे रहने के बावजूद कोई सफलता नहीं मिली है, जिससे सिपाही भी परेशान हो चुके थे। उसे यह भी लगा कि स्थानीय लोग वज़ीर अली का समर्थन कर रहे हैं।
- (ii) किसी का न पकड़ा जाना - वज़ीर अली और उसके समर्थक अभी तक पकड़ में नहीं आए थे। इस बात से लेफ्टीनेंट को महसूस हुआ कि लोग वज़ीर अली के पक्ष में हैं और कंपनी के खिलाफ पूरे देश में गुस्से की लहर दौड़ रही है।

प्रश्न 2. वज़ीर अली ने कंपनी के वकील का कत्ल क्यों किया?

उत्तर 2:

- (i) कलकत्ता बुलाने से नाराजगी - अंग्रेज़ों ने वज़ीर अली को पद से हटाकर बनारस भेज दिया था और उसे तीन लाख रुपये का सालाना वज़ीफा दिया गया। लेकिन जब गवर्नर जनरल ने वज़ीर अली को कलकत्ता बुलाया, तो इससे वह गुस्से से भर गया।
- (ii) वकील का अपमानजनक व्यवहार - जब वज़ीर अली इस बारे में जानकारी लेने कंपनी के वकील के पास गया, तो वकील ने अंग्रेज़ों का पक्ष लेते हुए उसे अपमानित किया। यह बात वज़ीर अली को बर्दाश्त नहीं हुई, और उसने गुस्से में आकर अपने खंजर से वकील की हत्या कर दी।

प्रश्न 3. सवार ने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किए?

उत्तर 3:

- (i) एकांत में मिलने का बहाना - सवार बड़ा चतुर और बहादुर था। उसने कैम्प में पहुंचकर कर्नल से अकेले में बात करने की अनुमति मांगी। उसने कहा कि वह एक गुप्त जानकारी साझा करना चाहता है। कर्नल ने उसके कहने पर अन्य सभी लोगों को बाहर भेज दिया।
- (ii) झूठ का सहारा - अकेले में बात करते हुए सवार ने वज़ीर अली को पकड़ने में मदद करने का भरोसा दिलाया। कर्नल को विश्वास दिलाकर उसने दस कारतूस ले लिए और वहां से चला गया।

प्रश्न 4. वज़ीर अली एक जांबाज सिपाही था, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

उत्तर 4:

(i) अंग्रेजों के लिए मुश्किलें खड़ी करना - वज़ीर अली ने अंग्रेजों के द्वारा दी गई सभी सुविधाओं को ठुकरा दिया। तीन लाख रुपये सालाना वजीफा मिलने के बावजूद उसने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया और उनकी योजनाओं को नाकाम कर दिया।

(ii) खतरों से खेलने की हिम्मत - वज़ीर अली में अद्भुत साहस था। उसने खुद कर्नल के कैंप में जाकर कारतूस मांगे और अपनी पहचान भी जाहिर कर दी। ऐसा दुस्साहस करना किसी साधारण व्यक्ति के बस की बात नहीं थी।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

1. मुट्ठीभर आदमी और ये दमखम ।

उत्तर 1: आशय: यह वाक्य कर्नल के शब्दों को व्यक्त करता है। इसका अर्थ है कि थोड़े-से लोग, जो संख्या में बहुत कम हैं, इतने साहसी और हिम्मती हैं कि हमारी पूरी सेना को चुनौती दे रहे हैं। कर्नल यह कहता है कि हमारी बड़ी सेना होने के बावजूद ये मुट्ठीभर लोग वर्षों से हमें मात देते आ रहे हैं। उनका साहस और आत्मविश्वास इतना प्रबल है कि हमारी ताकत भी उनके आगे कमजोर पड़ रही है।

2. गर्द तो ऐसे उड़ रही है जैसे कि पूरा एक काफिला चला आ रहा हो मगर मुझे तो एक ही सवार नज़र आता है।

उत्तर 2: आशय: यह वाक्य लेफ्टिनेंट के शब्दों को व्यक्त करता है। जब दूर से एक सवार आता दिखाई देता है, तो उसके घोड़े की तेज़ रफ्तार के कारण धूल का गुबार उठता है। लेफ्टिनेंट इसे देखकर कहता है कि धूल इतनी अधिक उठ रही है जैसे कोई बड़ा काफिला आ रहा हो। लेकिन वास्तविकता में वहां सिर्फ एक ही सवार होता है। इसका तात्पर्य यह है कि उस अकेले सवार में इतनी शक्ति और साहस है कि वह पूरे काफिले के समान प्रभावशाली प्रतीत होता है और सेना का सामना करने की क्षमता रखता है।

(भाषा अध्ययन)

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का एक-एक पर्याय लिखिए-

खिलाफ़, पाक, उम्मीद, हासिल, कामयाब, वज़ीफ़ा, नफरत, हमला, इंतजार, मुमकिन।

उत्तर 1: यहाँ दिए गए शब्दों के पर्यायवाची (समानार्थी) शब्द निम्नलिखित हैं:

1. खिलाफ़ - विरोध
2. पाक - पवित्र
3. उम्मीद - आशा
4. हासिल - प्राप्ति
5. कामयाब - सफल

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

6. वजीफ़ा - छात्रवृत्ति
7. नफरत - घृणा
8. हमला - आक्रमण
9. इंतजार - प्रतीक्षा
10. मुमकिन - संभव

प्रश्न 2. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए- आँखों में धूल झोंकना, कूट-कूट कर भरना, काम तमाम कर देना, जान बख़्श देना, हक्का-बक्का रह जाना।

उत्तर 2: यहाँ दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार है:

1. आँखों में धूल झोंकना
वाक्य: उस ठग ने भोले लोगों की आँखों में धूल झोंककर लाखों रुपये ठग लिए।
2. कूट-कूट कर भरना
वाक्य: राम के व्यक्तित्व में ईमानदारी और सच्चाई कूट-कूट कर भरी हुई है।
3. काम तमाम कर देना
वाक्य: पुलिस ने मुठभेड़ में उस खूंखार डाकू का काम तमाम कर दिया।
4. जान बख़्श देना
वाक्य: डाकू ने मिन्नतें करने पर किसान की जान बख़्श दी।
5. हक्का-बक्का रह जाना
वाक्य: परीक्षा में इतने अच्छे अंक देखकर मैं हक्का-बक्का रह गया।

प्रश्न 3. कारक वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध बताता है। निम्नलिखित वाक्यों में कारकों को रेखांकित कर उनके नाम लिखिए-

(क) जंगल की जिंदगी बड़ी खतरनाक होती है।

(ख) कंपनी के खिलाफ़ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई।

(ग) वज़ीर को उसके पद से हटा दिया गया।

(घ) फ़ौज के लिए कारतूस की आवश्यकता थी ।

(ङ) सिपाही घोड़े पर सवार था ।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

उत्तर 3: यहाँ वाक्यों में कारकों को रेखांकित कर उनके नाम बताए गए हैं:

(क) जंगल की जिंदगी बड़ी खतरनाक होती है।

- "की" – सम्बंध कारक

(ख) कंपनी के खिलाफ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई।

- "के खिलाफ" – अधिकरण कारक

(ग) वज़ीर को उसके पद से हटा दिया गया।

- "को" – सम्प्रदान कारक

(घ) फ़ौज के लिए कारतूस की आवश्यकता थी।

- "के लिए" – सम्प्रदान कारक

(ङ) सिपाही घोड़े पर सवार था।

- "पर" – अधिकरण कारक

प्रश्न 4 क्रिया का लिंग और वचन सामान्यतः कर्ता और कर्म के लिंग और वचन के अनुसार निर्धारित होता है। वाक्य में कर्ता और कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार जब क्रिया के लिंग, वचन आदि में परिवर्तन होता है तो उसे अन्विति कहते हैं।

क्रिया के लिंग, वचन में परिवर्तन तभी होता है जब कर्ता या कर्म परसर्ग रहित हों;

जैसे- सवार कारतूस माँग रहा था। (कर्ता के कारण)

सवार ने कारतूस माँगे। (कर्म के कारण)

कर्नल ने वज़ीर अली को नहीं पहचाना। (यहाँ क्रिया कर्ता और कर्म किसी के भी कारण प्रभावित नहीं है)

अतः कर्ता और कर्म के परसर्ग सहित होने पर क्रिया कर्ता और कर्म में से किसी के भी लिंग और वचन से प्रभावित नहीं होती और वह एकवचन पुल्लिंग में ही प्रयुक्त होती है। नीचे दिए गए वाक्यों में 'ने' लगाकर उन्हें दुबारा लिखिए-

(क) घोड़ा पानी पी रहा था।

(ख) बच्चे दशहरे का मेला देखने गए।

(ग) रॉबिनहुड गरीबों की मदद करता था।

(घ) देशभर के लोग उसकी प्रशंसा कर रहे थे।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

उत्तर 4: यहाँ वाक्यों में 'ने' जोड़कर उन्हें पुनः लिखा गया है:

(क) घोड़ा पानी पी रहा था।

- घोड़े ने पानी पिया।

(ख) बच्चे दशहरे का मेला देखने गए।

- बच्चों ने दशहरे का मेला देखा।

(ग) रॉबिनहुड गरीबों की मदद करता था।

- रॉबिनहुड ने गरीबों की मदद की।

(घ) देशभर के लोग उसकी प्रशंसा कर रहे थे।

- देशभर के लोगों ने उसकी प्रशंसा की।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाइए-

(क) कर्नल ने कहा सिपाहियों इस पर नज़र रखो ये किस तरफ जा रहा है

(ख) सवार ने पूछा आपने इस मकाम पर क्यों खेमा डाला है इतने लावलशकर की क्या ज़रूरत है.

(ग) खेमे के अंदर दो व्यक्ति बैठे बातें कर रहे थे चाँदनी छिटकी हुई थी और बाहर सिपाही पहरा दे रहे थे एक व्यक्ति कह रहा था दुश्मन कभी भी हमला कर सकता है।

उत्तर 5: यहाँ वाक्यों में उचित विराम-चिह्न जोड़कर उन्हें शुद्ध किया गया है:

(क) कर्नल ने कहा, "सिपाहियों, इस पर नज़र रखो। यह किस तरफ जा रहा है?"

(ख) सवार ने पूछा, "आपने इस मकाम पर क्यों खेमा डाला है? इतने लावलशकर की क्या ज़रूरत है?"

(ग) खेमे के अंदर दो व्यक्ति बैठे बातें कर रहे थे। चाँदनी छिटकी हुई थी और बाहर सिपाही पहरा दे रहे थे। एक व्यक्ति कह रहा था, "दुश्मन कभी भी हमला कर सकता है।"

(योग्यता विस्तार)

प्रश्न 1. पुस्तकालय से रॉबिनहुड के साहसिक कारनामों के बारे में जानकारी हासिल कीजिए।

उत्तर 1- रॉबिनहुड एक लोकप्रिय लोककथा का नायक है, जो मध्यकालीन इंग्लैंड में शेरवुड जंगल और नॉटिंघमशायर से संबंधित है। वह गरीबों के मसीहा और अमीरों के अत्याचारी शासकों के खिलाफ लड़ने वाला साहसी डाकू माना जाता है। उसकी कहानियों में साहस, न्याय और विद्रोह की भावना झलकती है।

रॉबिनहुड के साहसिक कारनामों की मुख्य बातें:

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

1. धन की लूट और वितरण: रॉबिनहुड अमीरों और भ्रष्ट शासकों से धन लूटकर गरीबों में बांटता था।
2. शेरवुड जंगल का नायक: शेरवुड जंगल में अपने साथियों के साथ रहकर वह अमीरों और नॉटिंघम के शेरिफ से मुकाबला करता था।
3. साहसी और कुशल धनुर्धर: रॉबिनहुड अपनी धनुर्विद्या और तेज बुद्धि के लिए प्रसिद्ध था।
4. साथियों की टोली: उसकी टोली "मेरी मैन" कहलाती थी, जिसमें लिटिल जॉन, फ्रायर टक और विल स्कारलेट जैसे साथी शामिल थे।
5. राजनीतिक विद्रोह: वह भ्रष्टाचार, अन्याय और अमीरों के शोषण के खिलाफ खड़ा होता था।

आप पुस्तकालय में निम्न प्रकार की पुस्तकें देख सकते हैं:

- "The Merry Adventures of Robin Hood" (Howard Pyle द्वारा)
- लोककथाओं की संग्रहित पुस्तकें
- ऐतिहासिक पात्रों पर आधारित उपन्यास

इन किताबों में रॉबिनहुड के साहसिक कारनामों का वर्णन मिलता है, जो उसकी न्यायप्रियता और बहादुरी को उजागर करते हैं।

प्रश्न 2. वृंदावन लाल वर्मा की कहानी इब्राहिम गार्दी पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

उत्तर 2- वृंदावन लाल वर्मा की कहानी "इब्राहिम गार्दी" एक ऐतिहासिक कथा है जो भारतीय इतिहास और संस्कृति को लेकर एक अद्भुत दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह कहानी मुख्य रूप से इब्राहिम गार्दी के साहस और निष्ठा पर आधारित है, जो एक सच्चे सेनानी के रूप में दिखाया गया है। वह अपने कर्तव्यों से परे अपने देश और धर्म के प्रति अपनी वफादारी निभाता है।

कहानी का सार:

इब्राहिम गार्दी एक अद्भुत सैनिक था जो अपने देश के प्रति सच्ची निष्ठा और प्यार रखता था। वह एक युद्ध के दौरान अपने दुश्मन से लड़ा और अपनी जान की परवाह किए बिना अपने कर्तव्यों का पालन किया। यह कहानी देशभक्ति, साहस, और बलिदान की भावना से प्रेरित करती है।

कहानी में इब्राहिम गार्दी की वीरता को व्यक्त किया गया है, जहाँ वह न केवल युद्ध के मैदान में अपने शौर्य का परिचय देता है, बल्कि अपने दोस्तों और साथियों के लिए भी एक प्रेरणा का स्रोत बनता है। उसकी निष्ठा और साहस की गाथाएँ पाठकों को अपने कर्तव्यों और आदर्शों के प्रति सच्चे रहने की प्रेरणा देती हैं।

कक्षा में कहानी सुनाने का तरीका:

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

1. कहानी की शुरुआत में इब्राहिम गार्दी का परिचय दें और उनके जीवन के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को बताएं।
2. कहानी का प्रमुख घटनाक्रम बताते हुए उसकी वीरता और साहस के उदाहरणों को साझा करें।
3. कहानी के अंत में उसके बलिदान और कर्तव्यपरायणता पर ध्यान केंद्रित करें, जिससे छात्रों को प्रेरणा मिले।
4. भावनात्मक संवाद का इस्तेमाल करते हुए, कहानी में शामिल पात्रों की भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करें।

यह कहानी न केवल एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारतीय इतिहास और संस्कृति के बारे में जागरूकता भी बढ़ाती है।

(परियोजना कार्य)

1. 'कारतूस' एकांकी का मंचन अपने विद्यालय में कीजिए।

उत्तर 1- 'कारतूस' एकांकी का मंचन विद्यालय में करने के लिए आपको कुछ महत्वपूर्ण कदमों का पालन करना होगा। यह एकांकी नाटक समर्पण, बलिदान, और युद्ध के दृष्टिकोण से संबंधित एक संवेदनशील और प्रभावशाली कहानी है।

मंचन के लिए तैयारी:

1. पात्रों का चयन: 'कारतूस' एकांकी में आमतौर पर कुछ मुख्य पात्र होते हैं, जैसे:
 - सिपाही (मुख्य पात्र)
 - वरिष्ठ अधिकारी
 - एक अन्य सिपाही या जवान
 - न्यायाधीश/अन्य अधिकारी इन पात्रों के चरित्र को ध्यान से समझकर ही उनकी भूमिका को सही ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।
2. सजावट और मंच की व्यवस्था:
 - मंच पर एक सामान्य युद्ध क्षेत्र या सेना के शिविर जैसा दृश्य प्रस्तुत किया जा सकता है।
 - मंच की सजावट में कागज, लकड़ी और अन्य सरल सामग्री से सामान तैयार किया जा सकता है।
 - कारतूस को एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा, जो युद्ध और बलिदान की बात करता है।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

3. प्रारंभिक संवाद: मंचन की शुरुआत संवाद से होती है, जहां सिपाही कारतूस के महत्व को समझाता है और इसे सही समय पर सही स्थान पर इस्तेमाल करने की आवश्यकता को दर्शाता है।
4. मुख्य घटनाक्रम:
 - संवादों के दौरान, नाटक का मुख्य संदेश यह हो सकता है कि कैसे कारतूस (या अन्य युद्ध सामग्री) का उपयोग केवल सही कारण के लिए किया जाना चाहिए, और यह युद्ध के अंतिम उद्देश्य से जुड़ा हुआ है।
 - पात्रों के संवादों के बीच एक दार्शनिक बहस हो सकती है कि क्या युद्ध हमेशा सही होता है या नहीं, और कैसे युद्ध में भी नैतिकता का पालन करना आवश्यक होता है।
5. भावनात्मक प्रस्तुति:
 - पात्रों के भावनाओं को स्पष्ट करने के लिए मंच पर हलचल, तनावपूर्ण क्षण, और नाटकीय वातावरण बनाए जाएं।
 - सिपाही का आंतरिक संघर्ष या उसके कर्तव्य और भावनाओं के बीच का द्वंद्व बहुत महत्वपूर्ण है। इस पर विशेष ध्यान दें।
6. समाप्ति: नाटक का समापन एक सशक्त और विचारणीय संदेश के साथ किया जा सकता है, जैसे युद्ध के मूल्य और मानवता के बीच संतुलन की आवश्यकता।

मंचन के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें:

- स्पष्ट उच्चारण: प्रत्येक संवाद को स्पष्ट और सटीक तरीके से बोलें ताकि दर्शक आसानी से समझ सकें।
- भावनाओं का अभिव्यक्ति: पात्रों के भावनात्मक उतार-चढ़ाव को दर्शाते हुए प्रदर्शन करें।
- समय प्रबंधन: नाटक के हर हिस्से का समय सही तरीके से प्रबंधित करें, ताकि कहानी में कोई गतिरोध न आए।

इस प्रकार, 'कारतूस' एकांकी का मंचन आपकी कक्षा या विद्यालय के मंच पर प्रभावी तरीके से किया जा सकता है, जो न केवल एक सांस्कृतिक अनुभव होगा, बल्कि छात्रों को युद्ध, नैतिकता, और बलिदान के बारे में विचार करने का अवसर भी देगा।

2. 'एकांकी' और 'नाटक' में क्या अंतर है। कुछ नाटकों और एकांकियों की सूची तैयार कीजिए ।

उत्तर 2- 'एकांकी' और 'नाटक' के बीच मुख्य अंतर इस प्रकार हैं:

एकांकी:

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

1. संरचना: एकांकी (One-act play) एक छोटे आकार का नाटक होता है, जिसमें एक ही सीन और सीमित पात्र होते हैं। इसमें केवल एक ही कहानी या घटना पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
2. समय: एकांकी का मंचन आमतौर पर 15 मिनट से लेकर 1 घंटे तक का होता है।
3. संवाद और घटनाएं: एकांकी में घटनाएँ तेजी से घटती हैं और यह संक्षिप्त और स्पष्ट होती है।
4. कथा: इसमें एक छोटा सा कथानक या संघर्ष होता है, जो आमतौर पर तात्कालिक समस्याओं, परिस्थितियों या भावनाओं पर आधारित होता है।
5. पात्रों की संख्या: पात्रों की संख्या कम होती है, और उनके संवादों पर ही कहानी का विकास होता है।

नाटक:

1. संरचना: नाटक (Play) सामान्य रूप से एक लंबा और विस्तृत रूप होता है, जिसमें कई दृश्य, पात्र और घटनाएँ होती हैं। इसका कथानक कई पहलुओं को छूता है।
2. समय: नाटक का मंचन कुछ घंटों तक हो सकता है।
3. संवाद और घटनाएं: नाटक में घटनाएँ धीरे-धीरे विकसित होती हैं और पात्रों के बीच के संबंधों को गहराई से दिखाया जाता है।
4. कथा: नाटक में जटिल कथा, विषय, और पात्रों की विकासशील कहानी होती है।
5. पात्रों की संख्या: नाटक में पात्रों की संख्या ज्यादा हो सकती है, और कहानी में विभिन्न घटनाओं और मोड़ होते हैं।

कुछ प्रसिद्ध एकांकी और नाटक:

एकांकी:

1. "कारतूस" – वृंदावनलाल वर्मा
2. "तलाशी" – विजय Tendulkar
3. "एक और एक ग्यारह" – श्रीराम के. नायक
4. "आत्महत्या" – मीरज बावा
5. "मुझे मत देखो" – लक्ष्मीकांत देशमुख

नाटक:

1. "आंधी" – कुसुम ठाकुर

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

2. "अंधा युग" – धर्मवीर भारती
3. "मच्छर" – सत्येन्द्र कपूर
4. "गोदान" – प्रेमचंद (आधिकारिक नाटक रूप में)
5. "रंगभूमि" – प्रेमचंद

इन दोनों शैलियों के नाटक के अलग-अलग प्रकार होते हैं, जो कलाकारों और दर्शकों दोनों के लिए विविधताएँ और दिलचस्पी पैदा करते हैं।

पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस) पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर, सारांश

पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस) का सारांश

नाटक: कारतूस:

लेखक: हबीब तनवीर

समय: सन् 1799

स्थान: गोरखपुर के जंगलों में अंग्रेज़ी फौज का कैंप

मुख्य पात्र:

- कर्नल कॉलिन्स
- लेफ्टिनेंट
- वज़ीर अली (अदृश्य लेकिन चर्चा में)
- सिपाही, सवार

मुख्य बिंदु:

1. वज़ीर अली का परिचय:
 - अवध के पुराने नवाब आसिफ़ उद्दौला के बेटे थे।
 - अंग्रेज़ों ने उन्हें सत्ता से हटा दिया और सआदत अली को नवाब बनाया।
 - वज़ीर अली ने अंग्रेज़ों के खिलाफ़ विद्रोह कर दिया।
2. विद्रोह का कारण:
 - अंग्रेज़ों की ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों से असंतोष।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

- वज़ीर अली को बनारस भेजा गया और फिर कलकत्ता तलब किया गया।
- उसने गुस्से में अंग्रेज़ वकील की हत्या कर दी और भाग निकला।

3. अंग्रेज़ों की चिंता:

- वज़ीर अली को पकड़ने के लिए फौज लगी हुई है।
- कर्नल और लेफ्टिनेंट वज़ीर अली की ताकत और रणनीति से परेशान हैं।
- वज़ीर अली का उद्देश्य नेपाल पहुँच कर अफगानों की मदद से अंग्रेज़ों को भारत से खदेड़ना है।

4. नाटकीय घटनाएँ:

- जंगल में अंग्रेज़ फौज तैनात है।
- एक सवार तेज़ी से कैंप की ओर आता है, जिससे बेचैनी बढ़ जाती है।
- सभी सिपाही तैयार रहने का आदेश मिलता है।

पाठ का उद्देश्य:

इस नाटक के माध्यम से हबीब तनवीर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली चिंगारी को जीवंत करते हैं। यह नाटक लोकनाट्य शैली में लिखा गया है और भारतीय इतिहास के अनसुने नायकों को नाट्य-मंच पर लाता है।

पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस) पर आधारित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: हबीब तनवीर के नाटक 'कारतूस' में स्वतंत्रता संग्राम का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

उत्तर: हबीब तनवीर के नाटक 'कारतूस' में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का सजीव चित्रण किया गया है। उन्होंने इस ऐतिहासिक घटना को आम जनमानस की दृष्टि से प्रस्तुत किया है। नाटक में किसानों, मजदूरों और साधारण लोगों की भागीदारी को उजागर किया गया है। हबीब तनवीर ने इसे केवल एक सैनिक विद्रोह न मानकर जन-विद्रोह के रूप में चित्रित किया है। उनके नाट्यशैली में लोकधर्मी तत्वों का समावेश इस प्रस्तुति को और प्रभावशाली बनाता है।

प्रश्न 2: 'कारतूस' नाटक में हबीब तनवीर ने लोक कला का प्रयोग किस प्रकार किया है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' नाटक में छत्तीसगढ़ी लोक रंगमंच की शैली को अपनाया है। नाटक में गीत, नृत्य और संवादों को लोकभाषा और परंपरागत लय में प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह नाटक दर्शकों को अधिक सजीव प्रतीत होता है। हबीब तनवीर लोक कलाकारों की मदद से इतिहास को जनमानस से जोड़ते हैं। यह शैली दर्शकों को गहराई से जोड़ती है और इतिहास को जीवंत बना देती है।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

प्रश्न 3: हबीब तनवीर के अनुसार सच्चा नायक कौन होता है, इसे 'कारतूस' में कैसे दिखाया गया है?

उत्तर: हबीब तनवीर 'कारतूस' नाटक में सच्चे नायक को वह मानते हैं जो समाज और देश के लिए संघर्ष करता है। उन्होंने सैनिकों और किसानों को नायक के रूप में दिखाया है, जो बिना किसी निजी स्वार्थ के आजादी के लिए लड़े। हबीब तनवीर के दृष्टिकोण में नायक का पद किसी ऊँचे ओहदे से नहीं, बल्कि कर्म और संघर्ष से तय होता है। यह सोच उनके नाटकों में विशेष रूप से दिखाई देती है।

प्रश्न 4: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' के माध्यम से उपनिवेशवाद की क्या आलोचना की है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' नाटक में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की क्रूरता, धोखाधड़ी और शोषण का खुलासा किया है। उन्होंने दिखाया कि किस प्रकार भारतीय सैनिकों को अंग्रेजों ने धोखे से अपने ही देशवासियों के विरुद्ध इस्तेमाल किया। हबीब तनवीर ने दर्शाया कि धार्मिक भावनाओं का अपमान कर अंग्रेजों ने विद्रोह की चिंगारी भड़काई। नाटक में उपनिवेशवादी ताकतों की अन्यायपूर्ण नीतियों की तीव्र आलोचना की गई है।

प्रश्न 5: 'कारतूस' में धर्म और विद्रोह का संबंध किस प्रकार दर्शाया गया है?

उत्तर: हबीब तनवीर के 'कारतूस' में धर्म और विद्रोह का गहरा संबंध दिखाया गया है। सैनिकों में विद्रोह की भावना तब जागी जब उन्हें बताया गया कि कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी लगी है। यह धार्मिक अपमान उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाता है और वे विद्रोह का रास्ता चुनते हैं। हबीब तनवीर ने यह संदेश दिया कि धर्म केवल पूजा का विषय नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और अस्मिता से जुड़ा होता है।

प्रश्न 6: 'कारतूस' नाटक में हबीब तनवीर ने इतिहास को कैसे पुनः परिभाषित किया?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' में इतिहास को शासकों की दृष्टि से नहीं, बल्कि आम जनता की दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उन्होंने परंपरागत ऐतिहासिक दृष्टिकोण को चुनौती देते हुए किसानों, मजदूरों और सैनिकों को इतिहास का नायक बनाया। उनके लिए इतिहास केवल तारीखों और राजाओं का वृत्तान्त नहीं, बल्कि जनआंदोलन और संघर्षों की कहानी है। हबीब तनवीर का यह प्रयास इतिहास को जनमानस के करीब लाता है।

प्रश्न 7: हबीब तनवीर ने अपने नाटक में लोक भाषा और संस्कृति का उपयोग क्यों किया?

उत्तर: हबीब तनवीर का मानना था कि कला तभी जीवंत होती है जब वह जनता से जुड़ी हो। 'कारतूस' में उन्होंने छत्तीसगढ़ी भाषा और लोक संस्कृति का इस्तेमाल किया ताकि नाटक अधिक प्रभावशाली बन सके। उनकी शैली में संवाद, गीत और अभिनय में स्थानीयता दिखाई देती है। हबीब तनवीर ने यह साबित किया कि लोक संस्कृति केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक संदेश देने का माध्यम भी है।

प्रश्न 8: हबीब तनवीर के अनुसार रंगमंच का उद्देश्य क्या होना चाहिए?

उत्तर: हबीब तनवीर के अनुसार रंगमंच केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम होना चाहिए। उनके नाटकों में यह उद्देश्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। 'कारतूस' में उन्होंने औपनिवेशिक शोषण, धार्मिक अपमान और जन विद्रोह को प्रमुख विषय बनाया। हबीब तनवीर का रंगमंच जनता की आवाज़ है जो शोषण और अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाता है।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

प्रश्न 9: 'कारतूस' नाटक में संवादों की क्या विशेषता है?

उत्तर: हबीब तनवीर के 'कारतूस' नाटक में संवाद सरल, प्रभावशाली और जनभाषा में हैं। संवादों में लोक जीवन की झलक मिलती है और इनका भावपूर्ण प्रस्तुतीकरण दर्शकों को गहराई से प्रभावित करता है। हर संवाद सामाजिक संदेश लिए होता है। हबीब तनवीर ने संवादों के माध्यम से जनता की पीड़ा, विद्रोह की भावना और ऐतिहासिक सच्चाइयों को सामने रखा।

प्रश्न 10: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' नाटक के माध्यम से किस प्रकार जनचेतना जगाने का प्रयास किया?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' के माध्यम से भारतीयों को अपने गौरवशाली अतीत और संघर्ष की भावना से जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने दर्शाया कि कैसे साधारण लोग भी अन्याय के विरुद्ध खड़े हो सकते हैं। नाटक में छुपा संदेश यह है कि यदि जनता जागरूक हो तो वह बड़े से बड़े सत्ता को चुनौती दे सकती है। हबीब तनवीर का यह प्रयास दर्शकों में राष्ट्रभक्ति और आत्मबल की भावना भर देता है।

प्रश्न 11: 'कारतूस' नाटक में हबीब तनवीर ने सैनिकों के मनोबल को कैसे प्रस्तुत किया है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' में सैनिकों के मनोबल को बहुत ही संवेदनशीलता से चित्रित किया है। उन्होंने दिखाया कि कैसे धार्मिक आस्था और आत्मसम्मान पर चोट सैनिकों को विद्रोह के लिए प्रेरित करती है। सैनिक अपने विश्वासों की रक्षा के लिए अंग्रेजों के खिलाफ खड़े हो जाते हैं। हबीब तनवीर ने यह दिखाया कि जब सैनिकों को अन्याय का अहसास होता है, तब वे सत्ता से टकराने का साहस जुटा लेते हैं।

प्रश्न 12: हबीब तनवीर का रंगमंच किस प्रकार पारंपरिक और आधुनिक तत्वों का संगम है?

उत्तर: हबीब तनवीर का रंगमंच परंपरा और आधुनिकता का अनूठा संगम है। उन्होंने लोक शैली, छत्तीसगढ़ी भाषा, लोकगीत, और पारंपरिक परिधान का प्रयोग करते हुए आधुनिक मुद्दों को मंच पर लाया। 'कारतूस' इसका उदाहरण है जहाँ ऐतिहासिक विषय को लोकधर्मों के ढंग से प्रस्तुत किया गया। हबीब तनवीर ने यह सिद्ध किया कि लोक कला भी आधुनिक विचारों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त कर सकती है।

प्रश्न 13: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' के पात्रों को किस प्रकार जन प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' के पात्रों को सामान्य जन के प्रतिनिधि के रूप में चित्रित किया है। वे किसी विशिष्ट वर्ग या जाति से नहीं, बल्कि साधारण किसान, मजदूर और सैनिक हैं। इन पात्रों के माध्यम से हबीब तनवीर ने यह बताया कि स्वतंत्रता संग्राम केवल वीरों की नहीं, आम जनता की भी लड़ाई थी। ये पात्र दर्शकों को अपने जैसे लगते हैं, जिससे वे नाटक से जुड़ाव महसूस करते हैं।

प्रश्न 14: हबीब तनवीर ने अपने नाटकों में स्त्रियों की भूमिका को कैसे प्रस्तुत किया?

उत्तर: हबीब तनवीर ने अपने नाटकों में स्त्रियों को केवल सहायक भूमिका में नहीं रखा, बल्कि उन्हें संघर्षशील और विचारशील दिखाया। 'कारतूस' में भी स्त्री पात्र समाज की सच्चाई को व्यक्त करती हैं और अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाती हैं। हबीब तनवीर का दृष्टिकोण स्त्रियों को केवल अबला नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना की वाहक मानता है। उन्होंने स्त्री पात्रों को सशक्त और प्रभावशाली बनाया।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

प्रश्न 15: 'कारतूस' नाटक भारतीय रंगमंच में किस दृष्टि से महत्वपूर्ण है?

उत्तर: हबीब तनवीर का 'कारतूस' भारतीय रंगमंच में एक मील का पत्थर माना जाता है। इस नाटक ने ऐतिहासिक घटनाओं को लोकशैली में प्रस्तुत करने का नया मार्ग खोला। हबीब तनवीर ने इसे न केवल मनोरंजन का माध्यम बनाया बल्कि जनजागरण का हथियार भी। उन्होंने यह दिखाया कि थिएटर केवल महानगरीय भाषा या मंच तक सीमित नहीं, बल्कि गांव-गांव की बात कहने का सशक्त माध्यम हो सकता है।

प्रश्न 16: हबीब तनवीर के नाटक 'कारतूस' में भावनाओं की अभिव्यक्ति किस प्रकार होती है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' में भावनाओं को अत्यंत सहज और स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत किया है। पात्रों की पीड़ा, क्रोध, असंतोष और विद्रोह लोकगीतों, हाव-भाव और संवादों के माध्यम से व्यक्त होते हैं। इन अभिव्यक्तियों में कोई बनावटीपन नहीं है। हबीब तनवीर की लोकनाट्य शैली दर्शकों को भावनात्मक रूप से प्रभावित करती है, जिससे वे नाटक के साथ आत्मिक जुड़ाव महसूस करते हैं।

प्रश्न 17: 'कारतूस' में हबीब तनवीर ने अंग्रेजी सत्ता की किन चालों को उजागर किया है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' में अंग्रेजों की सत्ता की चालों को बेनकाब किया है। उन्होंने दिखाया कि कैसे वे भारतीय सैनिकों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाकर विद्रोह की आग भड़काते हैं, फिर उसे दमन से कुचलते हैं। हबीब तनवीर ने यह भी बताया कि अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो नीति का प्रयोग कर भारतीय समाज को बाँटा। नाटक में इन चालों की गहरी आलोचना की गई है।

प्रश्न 18: हबीब तनवीर का नाटक 'कारतूस' आज के संदर्भ में कितना प्रासंगिक है?

उत्तर: 'कारतूस' आज के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है। हबीब तनवीर ने जो प्रश्न उठाए, जैसे सामाजिक न्याय, धार्मिक सहिष्णुता और जनभागीदारी, वे आज भी महत्वपूर्ण हैं। नाटक यह सिखाता है कि जब किसी समाज का आत्मसम्मान आहत होता है, तब विद्रोह स्वाभाविक होता है। हबीब तनवीर की दृष्टि में इतिहास से सीख लेकर वर्तमान में सजग रहना ज़रूरी है।

प्रश्न 19: हबीब तनवीर का योगदान भारतीय नाट्यकला को कैसे समृद्ध करता है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने भारतीय नाट्यकला को जनोन्मुख और लोकधर्मी बनाया। उन्होंने छत्तीसगढ़ी लोक कलाकारों को मंच पर लाकर उनकी प्रतिभा को राष्ट्रीय पहचान दिलाई। 'कारतूस' जैसे नाटकों के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध किया कि थिएटर केवल अभिजात वर्ग का नहीं, बल्कि जनता का माध्यम है। हबीब तनवीर का योगदान भारतीय रंगमंच को लोकतांत्रिक और विचारशील बनाता है।

प्रश्न 20: हबीब तनवीर की नाट्य शैली से क्या शैक्षिक संदेश प्राप्त होता है?

उत्तर: हबीब तनवीर की नाट्य शैली हमें यह सिखाती है कि शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं, बल्कि कला के माध्यम से भी दी जा सकती है। उन्होंने 'कारतूस' जैसे नाटकों से इतिहास, समाज और संस्कृति की गहरी समझ विकसित करने में मदद की। हबीब तनवीर की शैली में सामाजिक मुद्दों को रोचक, संवेदनशील और शिक्षाप्रद तरीके से प्रस्तुत किया जाता है, जो छात्रों और दर्शकों को गहराई से प्रभावित करता है।

पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस) पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: 'कारतूस' नाटक का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर: 'कारतूस' नाटक का मुख्य उद्देश्य औपनिवेशिक शासन के अत्याचारों को उजागर करना है। हबीब तनवीर ने इस नाटक के माध्यम से भारतीय सिपाहियों के साहस, बलिदान और स्वतंत्रता की भावना को दर्शाया है। यह नाटक 1857 के विद्रोह की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

प्रश्न 2: 'हबीब तनवीर' ने किस प्रकार की नाट्य शैली का प्रयोग किया है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने लोक नाट्य शैली का प्रयोग किया है। वे पारंपरिक गीत, संवाद और ग्रामीण पात्रों का उपयोग करते हैं जिससे नाटक और भी प्रभावशाली बन जाता है। उनका नाट्य प्रस्तुतिकरण दर्शकों से सीधा संवाद स्थापित करता है।

प्रश्न 3: 'कारतूस' नाटक का ऐतिहासिक महत्व क्या है?

उत्तर: 'कारतूस' नाटक 1857 के स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित है। हबीब तनवीर ने इस नाटक में इतिहास को जनमानस से जोड़ते हुए भारतीय सिपाहियों के संघर्ष को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। यह नाटक भारतीय इतिहास की चेतना को जागृत करता है।

प्रश्न 4: हबीब तनवीर के नाटकों की एक विशेषता क्या है?

उत्तर: हबीब तनवीर के नाटकों की प्रमुख विशेषता उनकी लोक परंपराओं से जुड़ी प्रस्तुति है। वे अपने पात्रों और भाषा में जनसामान्य की सादगी को प्रस्तुत करते हैं। उनकी शैली आम लोगों से जुड़ाव पैदा करती है।

प्रश्न 5: 'कारतूस' नाटक का नायक कौन है और वह क्या दर्शाता है?

उत्तर: 'कारतूस' का नायक एक सिपाही है जो विद्रोह में भाग लेता है। हबीब तनवीर इस पात्र के माध्यम से वीरता, विरोध और आत्मबलिदान की भावना को दर्शाते हैं। यह नायक आम भारतीय की स्वतंत्रता के प्रति चेतना को दर्शाता है।

प्रश्न 6: हबीब तनवीर ने संवादों के माध्यम से क्या प्रभाव उत्पन्न किया है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने संवादों को सहज, सरल और प्रभावशाली बनाया है। उनके संवाद पात्रों की मानसिकता और परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं, जिससे दर्शकों में भावनात्मक जुड़ाव होता है।

प्रश्न 7: 'कारतूस' नाटक में धार्मिक भावनाओं का क्या महत्व है?

उत्तर: 'कारतूस' में धार्मिक भावनाओं का प्रयोग अंग्रेजों के षड्यंत्र को उजागर करने हेतु किया गया है। हबीब तनवीर ने दिखाया है कि कैसे धार्मिक विश्वासों को ठेस पहुँचाकर भारतीय सिपाहियों में असंतोष फैलाया गया।

प्रश्न 8: हबीब तनवीर ने नाटक के माध्यम से किस प्रकार की चेतना को जगाया?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' के माध्यम से स्वतंत्रता, एकता और संघर्ष की चेतना को जगाया। वे दर्शकों को यह बताना चाहते हैं कि इतिहास से प्रेरणा लेकर वर्तमान में भी अन्याय का विरोध जरूरी है।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

प्रश्न 9: 'कारतूस' में कौन-कौन से लोक तत्व दिखाई देते हैं?

उत्तर: 'कारतूस' में लोकगीत, पारंपरिक वेशभूषा, बोलचाल की भाषा और ग्रामीण परिवेश प्रमुख लोक तत्व हैं। हबीब तनवीर इन तत्वों का प्रयोग कर नाटक को जनमानस से जोड़ते हैं।

प्रश्न 10: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' को कैसे प्रस्तुत किया?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' को लोक शैली में, मंच पर न्यूनतम संसाधनों के साथ प्रस्तुत किया। उनका उद्देश्य विषयवस्तु को सरल, सजीव और दर्शकों के करीब रखना था। उनका मंचन शैली आम लोगों को आकर्षित करती है।

प्रश्न 11: 'कारतूस' में अंग्रेजों की नीति का क्या चित्रण है?

उत्तर: 'कारतूस' में अंग्रेजों की "फूट डालो और राज करो" नीति का चित्रण हुआ है। हबीब तनवीर ने बताया कि कैसे उन्होंने धर्म और जाति के नाम पर भारतीयों को बांटने का प्रयास किया।

प्रश्न 12: हबीब तनवीर की भाषा शैली कैसी है?

उत्तर: हबीब तनवीर की भाषा शैली सहज, जनसामान्य की बोलचाल की भाषा से जुड़ी है। वे स्थानीय बोलियों का प्रयोग कर पात्रों को जीवंत बनाते हैं, जिससे नाटक और अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

प्रश्न 13: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' में किस माध्यम से देशभक्ति दर्शाई है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने सिपाहियों के साहस, संघर्ष और बलिदान के माध्यम से देशभक्ति को दर्शाया है। उनके नाटक में स्वतंत्रता की भावना और औपनिवेशिक विरोध की झलक स्पष्ट रूप से मिलती है।

प्रश्न 14: 'कारतूस' का शीर्षक क्या संकेत करता है?

उत्तर: 'कारतूस' शीर्षक 1857 के विद्रोह में इस्तेमाल की गई विवादास्पद कारतूसों की ओर संकेत करता है। हबीब तनवीर इस प्रतीक के माध्यम से धार्मिक भावनाओं और संघर्ष की शुरुआत को दर्शाते हैं।

प्रश्न 15: हबीब तनवीर के नाटकों में सामाजिक सरोकार कैसे झलकते हैं?

उत्तर: हबीब तनवीर के नाटक समाज की समस्याओं और संघर्षों को उजागर करते हैं। 'कारतूस' में उन्होंने धार्मिक भेदभाव, अंग्रेजों के षड्यंत्र और जनजागरण को उभारा है, जो उनके सामाजिक सरोकार दर्शाता है।

प्रश्न 16: 'कारतूस' में किस ऐतिहासिक घटना का चित्रण है?

उत्तर: 'कारतूस' में 1857 की क्रांति का चित्रण है। हबीब तनवीर ने इस क्रांति के प्रारंभ, कारण और प्रभाव को नाटक के माध्यम से दर्शाया है, जिससे दर्शकों को इतिहास से जुड़ने का अवसर मिलता है।

प्रश्न 17: हबीब तनवीर का लोक कलाकारों के साथ काम करने का क्या उद्देश्य था?

उत्तर: हबीब तनवीर का उद्देश्य लोक कलाकारों की कला को मंच पर लाकर उसकी गरिमा बढ़ाना था। वे मानते थे कि ग्रामीण कलाकारों में मौलिकता और अभिव्यक्ति की शक्ति अधिक होती है।

प्रश्न 18: 'कारतूस' में नारी पात्रों की क्या भूमिका है?

उत्तर: 'कारतूस' में नारी पात्रों को सहायक भूमिका में दर्शाया गया है, जो पुरुषों के संघर्ष में उनका मनोबल बढ़ाती हैं। हबीब तनवीर ने महिलाओं को भावनात्मक बल के रूप में प्रस्तुत किया है।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

प्रश्न 19: हबीब तनवीर के अनुसार रंगमंच का क्या उद्देश्य होना चाहिए?

उत्तर: हबीब तनवीर मानते थे कि रंगमंच समाज को जागरूक करने का माध्यम होना चाहिए। उनके नाटक सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मुद्दों को उठाते हैं, जो दर्शकों को सोचने पर मजबूर करते हैं।

प्रश्न 20: 'कारतूस' नाटक से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर: 'कारतूस' से हमें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष, देशभक्ति और एकता की सीख मिलती है। हबीब तनवीर इस नाटक के माध्यम से दर्शकों को इतिहास से प्रेरणा लेकर वर्तमान में सक्रिय रहने का संदेश देते हैं।

पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस) पर आधारित (Extra Questions)

प्रश्न 1. 'कारतूस' नाटक किस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है?

उत्तर: 'कारतूस' नाटक 1857 की क्रांति की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसमें भारतीय सैनिकों के विद्रोह को दर्शाया गया है। यह नाटक उस समय के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक माहौल को उजागर करता है। अंग्रेजों द्वारा चर्बी लगे कारतूस थमाना धार्मिक भावनाओं का अपमान था, जिससे भारतीय सिपाही आक्रोशित हुए और विद्रोह का बिगुल बजा।

प्रश्न 2. नाटक 'कारतूस' में धर्म के मुद्दे को किस प्रकार दिखाया गया है?

उत्तर: नाटक 'कारतूस' में धर्म को केंद्र में रखकर यह दिखाया गया है कि अंग्रेजों ने हिन्दू-मुस्लिम दोनों के धार्मिक विश्वासों का उल्लंघन किया। सुअर और गाय की चर्बी लगे कारतूस थमाकर धार्मिक भावनाओं को आहत किया गया, जिससे लोगों में एकजुटता पैदा हुई। यह दिखाता है कि धर्म के नाम पर हुए अपमान ने विद्रोह को जन्म दिया।

प्रश्न 3. 'कारतूस' नाटक में हिन्दू-मुस्लिम एकता कैसे प्रकट होती है?

उत्तर: नाटक में हिन्दू और मुस्लिम सैनिकों को एक साझा संकट का सामना करते हुए दिखाया गया है। अंग्रेजों द्वारा धार्मिक भावनाओं का अपमान किए जाने पर दोनों समुदायों ने एक होकर विद्रोह किया। इससे स्पष्ट होता है कि जब धार्मिक आस्था पर आघात होता है, तो लोग जाति-धर्म से ऊपर उठकर एक हो जाते हैं।

प्रश्न 4. हबीब तनवीर ने 'कारतूस' में किस शैली का प्रयोग किया है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' में लोकनाट्य शैली का प्रयोग किया है। उन्होंने पारंपरिक संगीत, लोक भाषा और नाटकीय संवादों का उपयोग कर नाटक को जीवंत और जनसुलभ बनाया। इससे दर्शकों को पात्रों से जुड़ने और इतिहास की सच्चाई को समझने में आसानी होती है। लोकशैली ने नाटक को प्रभावशाली और संवेदनशील बनाया।

प्रश्न 5. 'कारतूस' नाटक का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर: 'कारतूस' नाटक का मुख्य संदेश है - एकता में शक्ति है। नाटक दिखाता है कि धर्म के नाम पर जब अत्याचार होता है, तो लोग मिलकर अत्याचारी के विरुद्ध खड़े होते हैं। हिन्दू-मुस्लिम एकता, साहस और संघर्ष की भावना इस नाटक का मूल संदेश है, जो आज के समाज में भी प्रासंगिक है।

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

प्रश्न 6. 'कारतूस' नाटक में कौन-कौन से प्रमुख पात्र हैं और उनकी भूमिका क्या है?

उत्तर: 'कारतूस' नाटक में प्रमुख पात्र सैनिक, सूबेदार, मौलवी, पंडित आदि हैं। ये सभी विभिन्न धर्मों और वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन पात्रों के माध्यम से लेखक ने दिखाया कि कैसे विभिन्न धार्मिक और सामाजिक वर्गों ने एकजुट होकर अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया। हर पात्र क्रांति के किसी न किसी पहलू को उजागर करता है।

प्रश्न 7. हबीब तनवीर ने नाटक में 'कारतूस' को प्रतीक के रूप में कैसे प्रयोग किया है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' को प्रतीक बनाकर उसे धार्मिक अपमान, दमन और विद्रोह का संकेत बना दिया है। यह कारतूस केवल हथियार नहीं बल्कि भारतीय आत्मसम्मान पर चोट का प्रतीक है। इसके माध्यम से लेखक ने दिखाया कि कैसे एक छोटी सी बात ने व्यापक विद्रोह को जन्म दिया और भारतीय इतिहास की दिशा बदल दी।

प्रश्न 8. 'कारतूस' नाटक में अंग्रेजों के व्यवहार को कैसे चित्रित किया गया है?

उत्तर: नाटक में अंग्रेजों को दमनकारी और असंवेदनशील शासकों के रूप में दर्शाया गया है। वे भारतीयों की धार्मिक भावनाओं की परवाह नहीं करते और उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। उनका व्यवहार अत्याचारी, जातिवादी और साम्राज्यवादी मानसिकता को उजागर करता है, जो अंततः विद्रोह की जड़ बनता है।

प्रश्न 9. नाटक 'कारतूस' में संवादों की भाषा की विशेषता क्या है?

उत्तर: नाटक के संवाद सरल, प्रभावशाली और जनभाषा में हैं। इसमें उर्दू, हिंदी और लोकभाषा का सुंदर मिश्रण है, जिससे हर वर्ग का दर्शक जुड़ाव महसूस करता है। संवादों में भावनात्मक अपील और विद्रोह की चेतना है, जो दर्शकों को सोचने पर मजबूर करती है। भाषा ही नाटक की आत्मा है।

प्रश्न 10. नाटक 'कारतूस' में 1857 के सिपाही विद्रोह को किस दृष्टिकोण से देखा गया है?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 1857 के सिपाही विद्रोह को केवल सैनिकों की बगावत नहीं, बल्कि एक सामाजिक और धार्मिक क्रांति के रूप में प्रस्तुत किया है। यह विद्रोह उस समय की जनता की पीड़ा और उनके आत्मसम्मान की लड़ाई का प्रतीक बनता है। नाटक इसे जन क्रांति और एकता की मिसाल के रूप में दिखाता है।

प्रश्न 11. हबीब तनवीर ने 'कारतूस' नाटक के माध्यम से भारतीय थिएटर को क्या योगदान दिया?

उत्तर: हबीब तनवीर ने 'कारतूस' के माध्यम से भारतीय रंगमंच को जन केंद्रित और लोक प्रेरित मंचन की दिशा दी। उन्होंने भारतीय लोकसंस्कृति, भाषा और परंपरा को नाटक में आत्मसात कर उसे जीवंत और व्यापक बनाया। उन्होंने थिएटर को केवल प्रदर्शन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और एकता का मंच बनाया।

प्रश्न 12. 'कारतूस' नाटक आज के समाज के लिए कितना प्रासंगिक है?

उत्तर: 'कारतूस' नाटक आज भी उतना ही प्रासंगिक है क्योंकि यह धार्मिक सहिष्णुता, एकता और अन्याय के खिलाफ संघर्ष का संदेश देता है। जब आज भी समाज में धर्म के नाम पर भेदभाव होता है, यह नाटक प्रेरणा देता है कि हम मिलकर सामाजिक बुराइयों का सामना करें और एकजुटता बनाए रखें।

प्रश्न 13. 'कारतूस' नाटक की कथावस्तु से छात्रों को क्या सीख मिलती है?

उत्तर: छात्रों को नाटक से यह सीख मिलती है कि धार्मिक भावनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

आवश्यक है। साथ ही यह भी कि जब अन्याय हो, तो एकता और साहस से उसका विरोध करना चाहिए। नाटक प्रेरित करता है कि समाज में समरसता, सहयोग और समझदारी जरूरी है।

प्रश्न 14. 'कारतूस' नाम नाटक के लिए उपयुक्त शीर्षक क्यों है?

उत्तर: 'कारतूस' नाटक के लिए उपयुक्त शीर्षक है क्योंकि यही घटना पूरी कथा का केंद्र है। चर्बी लगे कारतूस से उपजे अपमान और विद्रोह की भावना पूरी कहानी को आगे बढ़ाते हैं। यह कारतूस भारतीय स्वाभिमान, धर्म और एकता के प्रतीक बन जाते हैं। इसलिए 'कारतूस' शीर्षक सटीक और प्रभावशाली है।

प्रश्न 15. हबीब तनवीर के नाटकों में लोकसंस्कृति का क्या महत्व है?

उत्तर: हबीब तनवीर के नाटकों में लोकसंस्कृति को विशेष स्थान प्राप्त है। वे पारंपरिक लोकगीतों, नृत्यों और बोलियों को अपने नाटकों में समाहित करते हैं, जिससे नाटक अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनते हैं। इससे दर्शकों को अपनी जड़ों से जुड़ाव महसूस होता है और वे नाटक से भावनात्मक रूप से जुड़ते हैं।

प्रश्न 16. 'कारतूस' नाटक किस प्रकार जन जागरूकता फैलाने में सहायक है?

उत्तर: 'कारतूस' नाटक सामाजिक और धार्मिक मुद्दों को उजागर कर दर्शकों में चेतना लाता है। यह बताता है कि अन्याय के विरुद्ध एकजुट होकर ही बदलाव लाया जा सकता है। नाटक से दर्शकों को इतिहास की सच्चाइयों की जानकारी मिलती है और वे समाज के प्रति अधिक जिम्मेदार बनते हैं।

प्रश्न 17. 'कारतूस' में दिखाया गया सैनिकों का विद्रोह किन कारणों से उत्पन्न हुआ?

उत्तर: सैनिकों का विद्रोह अंग्रेजों द्वारा चर्बी लगे कारतूस थमाने से उत्पन्न हुआ, जिससे उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची। इसके अलावा, वेतन में कटौती, भेदभावपूर्ण व्यवहार और सामाजिक अपमान भी विद्रोह के कारण बने। इन सबने सैनिकों को एकजुट होकर विद्रोह के लिए प्रेरित किया।

प्रश्न 18. हबीब तनवीर का लेखन छात्रों को क्यों पढ़ना चाहिए?

उत्तर: हबीब तनवीर का लेखन भारतीय संस्कृति, सामाजिक चेतना और इतिहास की समझ को गहराई से प्रस्तुत करता है। उनके नाटकों में सादगी, संवेदना और समाज के यथार्थ का चित्रण होता है, जिससे छात्र न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध होते हैं, बल्कि समाज को भी समझने लगते हैं।

प्रश्न 19. नाटक 'कारतूस' में मौलवी और पंडित की भूमिका क्या संदेश देती है?

उत्तर: नाटक में मौलवी और पंडित दोनों ही धर्मगुरु होकर सैनिकों को एकजुट होने का संदेश देते हैं। वे दिखाते हैं कि धर्म का सच्चा उद्देश्य समाज को जोड़ना है, तोड़ना नहीं। उनकी भूमिका यह स्पष्ट करती है कि जब धर्म के नाम पर अत्याचार होता है, तो सच्चे धर्मगुरु एकता का संदेश देते हैं।

प्रश्न 20. 'कारतूस' नाटक से राष्ट्रीय भावना कैसे जागृत होती है?

उत्तर: 'कारतूस' नाटक में दिखाया गया 1857 का विद्रोह भारतीयों की आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की भावना को प्रकट करता है। यह नाटक दर्शकों में देशभक्ति, साहस और एकता की भावना जगाता है। जब सैनिक धर्म और सम्मान के लिए लड़ते हैं, तब दर्शक भी प्रेरित होकर देश और समाज के लिए सोचने लगते हैं।

पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस) पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

www.ncertsolutionhub.in

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

1. 'कारतूस' नाटक का विषय किस पर आधारित है?

- A) स्वतंत्रता संग्राम
- B) सामाजिक कुरीतियाँ
- C) शिक्षा व्यवस्था
- D) आर्थिक असमानता

उत्तर: A) स्वतंत्रता संग्राम

2. 'कारतूस' नाटक के लेखक कौन हैं?

- A) मोहन राकेश
- B) भीष्म साहनी
- C) हबीब तनवीर
- D) धर्मवीर भारती

उत्तर: C) हबीब तनवीर

3. 'कारतूस' नाटक में कौन-सी ऐतिहासिक घटना को दर्शाया गया है?

- A) 1857 की क्रांति
- B) जलियांवाला बाग हत्याकांड
- C) दांडी यात्रा
- D) भारत छोड़ो आंदोलन

उत्तर: A) 1857 की क्रांति

4. सिपाहियों के विद्रोह का कारण क्या था?

- A) वेतन कम मिलना
- B) गोरी सेना से नाराजगी
- C) कारतूसों में चर्बी का प्रयोग
- D) अंग्रेजों की भाषा सीखना

उत्तर: C) कारतूसों में चर्बी का प्रयोग

5. कारतूस में चर्बी का प्रयोग किस धर्म के लिए आपत्तिजनक था?

- A) ईसाई और बौद्ध
- B) हिन्दू और मुस्लिम
- C) सिख और जैन
- D) पारसी और मुस्लिम

उत्तर: B) हिन्दू और मुस्लिम

6. 'कारतूस' नाटक की शैली क्या है?

- A) प्रहसन
- B) एकांकी

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

- C) लोकनाट्य
D) संवादहीन नाटक

उत्तर: C) लोकनाट्य

7. हबीब तनवीर ने किस लोकशैली का प्रयोग नाटक में किया है?

- A) तमाशा
B) nautanki
C) स्वांग
D) छत्तीसगढ़ी लोकशैली

उत्तर: D) छत्तीसगढ़ी लोकशैली

8. 'कारतूस' नाटक का उद्देश्य क्या है?

- A) मनोरंजन
B) इतिहास का पुनर्निर्माण
C) स्वतंत्रता संग्राम का स्मरण
D) अंग्रेजों की प्रशंसा

उत्तर: C) स्वतंत्रता संग्राम का स्मरण

9. 'कारतूस' में सैनिकों की भूमिका किसने निभाई?

- A) प्रोफेशनल कलाकारों ने
B) विदेशी कलाकारों ने
C) गाँव के लोगों ने
D) छात्र कलाकारों ने

उत्तर: C) गाँव के लोगों ने

10. 'कारतूस' नाटक में कौन-सा तत्व विशेष रूप से प्रयुक्त है?

- A) आधुनिक तकनीक
B) लोकगीत और लोकनृत्य
C) अंग्रेजी भाषा
D) फिल्मी गाने

उत्तर: B) लोकगीत और लोकनृत्य

11. नाटक में किसकी चर्ची कारतूस में होने की बात थी?

- A) भैंस और बकरी
B) गाय और सूअर
C) हाथी और ऊँट
D) मुर्गी और खरगोश

उत्तर: B) गाय और सूअर

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

12. 'कारतूस' किस रूप में प्रस्तुत किया गया है?

- A) रेडियो नाटक
- B) मंचन नाटक
- C) चलचित्र
- D) कहानी

उत्तर: B) मंचन नाटक

13. हबीब तनवीर का मुख्य उद्देश्य क्या था?

- A) पारंपरिक लोक रंगमंच को पुनर्जीवित करना
- B) राजनीतिक आलोचना
- C) आधुनिक तकनीक का प्रयोग
- D) विदेशी रंगशैली को अपनाना

उत्तर: A) पारंपरिक लोक रंगमंच को पुनर्जीवित करना

14. हबीब तनवीर ने नाटक की प्रस्तुति के लिए किस भाषा का प्रयोग अधिक किया?

- A) संस्कृत
- B) अंग्रेजी
- C) उर्दू
- D) छत्तीसगढ़ी

उत्तर: D) छत्तीसगढ़ी

15. नाटक में सैनिकों के विद्रोह को किस रूप में दिखाया गया है?

- A) हास्य के माध्यम से
- B) करुणा के साथ
- C) वीरता और साहस के प्रतीक रूप में
- D) उपेक्षा के साथ

उत्तर: C) वीरता और साहस के प्रतीक रूप में

16. 'कारतूस' नाटक में गीतों की भूमिका क्या है?

- A) विषय को हल्का बनाना
- B) नाटक को लंबा करना
- C) कथा को प्रभावी बनाना
- D) हास्य उत्पन्न करना

उत्तर: C) कथा को प्रभावी बनाना

17. 'हबीब तनवीर' किस क्षेत्र के प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक थे?

- A) पंजाब
- B) मध्य प्रदेश

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

C) उत्तर प्रदेश

D) बिहार

उत्तर: B) मध्य प्रदेश

18. हबीब तनवीर के नाटकों में मुख्यतः क्या दर्शाया गया है?

A) विदेशी संस्कृति

B) सामाजिक विसंगतियाँ

C) धार्मिक कट्टरता

D) शहरी जीवन

उत्तर: B) सामाजिक विसंगतियाँ

19. 'कारतूस' शब्द से क्या तात्पर्य है?

A) सैनिकों का भोजन

B) विद्रोह का प्रतीक

C) अंग्रेजों का कानून

D) सम्मान चिन्ह

उत्तर: B) विद्रोह का प्रतीक

20. 'कारतूस' नाटक में नायक कौन है?

A) राजा

B) सिपाही

C) जर्मीदार

D) ब्रिटिश अधिकारी

उत्तर: B) सिपाही

पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस) पर आधारित प्रश्न True or False (सही या गलत)

- हबीब तनवीर ने 'कारतूस' नाटक में 1857 की क्रांति को दर्शाया है।

उत्तर: सही

- हबीब तनवीर के नाटक 'कारतूस' में अंग्रेजों की विजय का गुणगान किया गया है।

उत्तर: गलत

- 'कारतूस' हबीब तनवीर द्वारा लिखित एक ऐतिहासिक लोकनाट्य है।

उत्तर: सही

- हबीब तनवीर का नाटक 'कारतूस' केवल शहर के दर्शकों के लिए बनाया गया था।

उत्तर: गलत

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

- हबीब तनवीर ने 'कारतूस' में लोकशैली और लोकभाषा का प्रयोग किया है।
उत्तर: सही
- हबीब तनवीर का उद्देश्य अपने नाटक के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की भावना को जीवित रखना था।
उत्तर: सही
- हबीब तनवीर ने 'कारतूस' में विदेशी रंगमंच शैली को अपनाया था।
उत्तर: गलत
- हबीब तनवीर छत्तीसगढ़ी लोक कलाकारों को मंच पर स्थान देने वाले प्रमुख नाट्य निर्देशक थे।
उत्तर: सही
- 'कारतूस' में हबीब तनवीर ने केवल लिखित संवादों का प्रयोग किया, गीतों का नहीं।
उत्तर: गलत
- हबीब तनवीर के नाटक 'कारतूस' में सैनिकों का विद्रोह धार्मिक भावना से जुड़ा हुआ है।
उत्तर: सही
- हबीब तनवीर के 'कारतूस' में लोकगीत और नृत्य कहानी को प्रभावशाली बनाते हैं।
उत्तर: सही
- हबीब तनवीर के नाटक 'कारतूस' में कारतूसों में चर्बी होने की अफवाह को विद्रोह का कारण बताया गया है।
उत्तर: सही
- हबीब तनवीर ने 'कारतूस' नाटक में केवल कल्पना पर आधारित घटनाएँ प्रस्तुत की हैं।
उत्तर: गलत
- हबीब तनवीर का नाटक 'कारतूस' आज़ादी की चेतना जगाने का कार्य करता है।
उत्तर: सही
- हबीब तनवीर ने 'कारतूस' के माध्यम से शहरी जीवन की समस्याओं को उजागर किया।
उत्तर: गलत
- 'कारतूस' में हबीब तनवीर ने आम ग्रामीणों को भी अभिनय का अवसर दिया।
उत्तर: सही
- हबीब तनवीर के नाटक 'कारतूस' में धार्मिक सहिष्णुता का संदेश भी निहित है।
उत्तर: सही
- हबीब तनवीर का नाटक 'कारतूस' केवल अंग्रेज़ी भाषा में लिखा गया था।
उत्तर: गलत

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

- हबीब तनवीर ने नाटक को दर्शकों तक पहुँचाने के लिए लोक मंचन शैली अपनाई।
उत्तर: सही
- हबीब तनवीर द्वारा रचित 'कारतूस' एक प्रहसन (हास्यप्रधान नाटक) है।
उत्तर: गलत

पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस) पर आधारित रिक्त स्थान भरिए -

1. 'कारतूस' नाटक के लेखक का नाम _____ है।
उत्तर: हबीब तनवीर
2. 'कारतूस' नाटक की पृष्ठभूमि _____ की क्रांति से जुड़ी है।
उत्तर: 1857
3. अंग्रेजों ने जो कारतूस दिए, उनमें _____ और _____ की चर्बी मिली होती थी।
उत्तर: गाय, सूअर
4. 'कारतूस' नाटक में लोक शैली के रूप में _____ लोक परंपरा का प्रयोग हुआ है।
उत्तर: छत्तीसगढ़ी
5. हबीब तनवीर का उद्देश्य _____ रंगमंच को जीवित रखना था।
उत्तर: लोक
6. 'कारतूस' नाटक में मुख्य पात्र एक _____ होता है।
उत्तर: सिपाही
7. हबीब तनवीर ने _____ रंगमंच की परंपरा को आधुनिक मंच पर जीवंत किया।
उत्तर: ग्रामीण/लोक
8. 'कारतूस' नाटक में _____ और _____ धर्म के सैनिकों को आपत्ति होती है।
उत्तर: हिन्दू, मुस्लिम
9. कारतूसों में चर्बी होने से सैनिकों ने _____ कर दिया।
उत्तर: विद्रोह
10. 'कारतूस' नाटक में कथानक को आगे बढ़ाने के लिए _____ और _____ का प्रयोग किया गया है।
उत्तर: गीत, संवाद
11. हबीब तनवीर का जन्म _____ में हुआ था।
उत्तर: 1923

Ncert Solutions of पाठ 14 हबीब तनवीर (कारतूस)

12. 'कारतूस' नाटक में स्थानीय कलाकारों और _____ लोगों को मंच पर लाया गया।

उत्तर: ग्रामीण

13. 'कारतूस' नाटक के माध्यम से हबीब तनवीर ने _____ चेतना को जागृत किया।

उत्तर: स्वतंत्रता

14. नाटक में सैनिकों की स्थिति _____ और संघर्षपूर्ण दिखाई गई है।

उत्तर: दयनीय

15. हबीब तनवीर को _____ नाट्य परंपरा का संरक्षक माना जाता है।

उत्तर: भारतीय लोक

16. 'कारतूस' में ब्रिटिश हुकूमत की _____ नीतियों को उजागर किया गया है।

उत्तर: शोषणकारी

17. नाटक में _____ के प्रति सैनिकों की आस्था को ठेस पहुँचती है।

उत्तर: धर्म

18. हबीब तनवीर के नाटक सामान्यतः _____ भाषा में होते थे।

उत्तर: लोक/छत्तीसगढ़ी

19. 'कारतूस' नाटक को दर्शकों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए _____ का सहारा लिया गया।

उत्तर: लोकगीतों

20. 'कारतूस' एक प्रतीक है _____ और विद्रोह का।

उत्तर: असंतोष